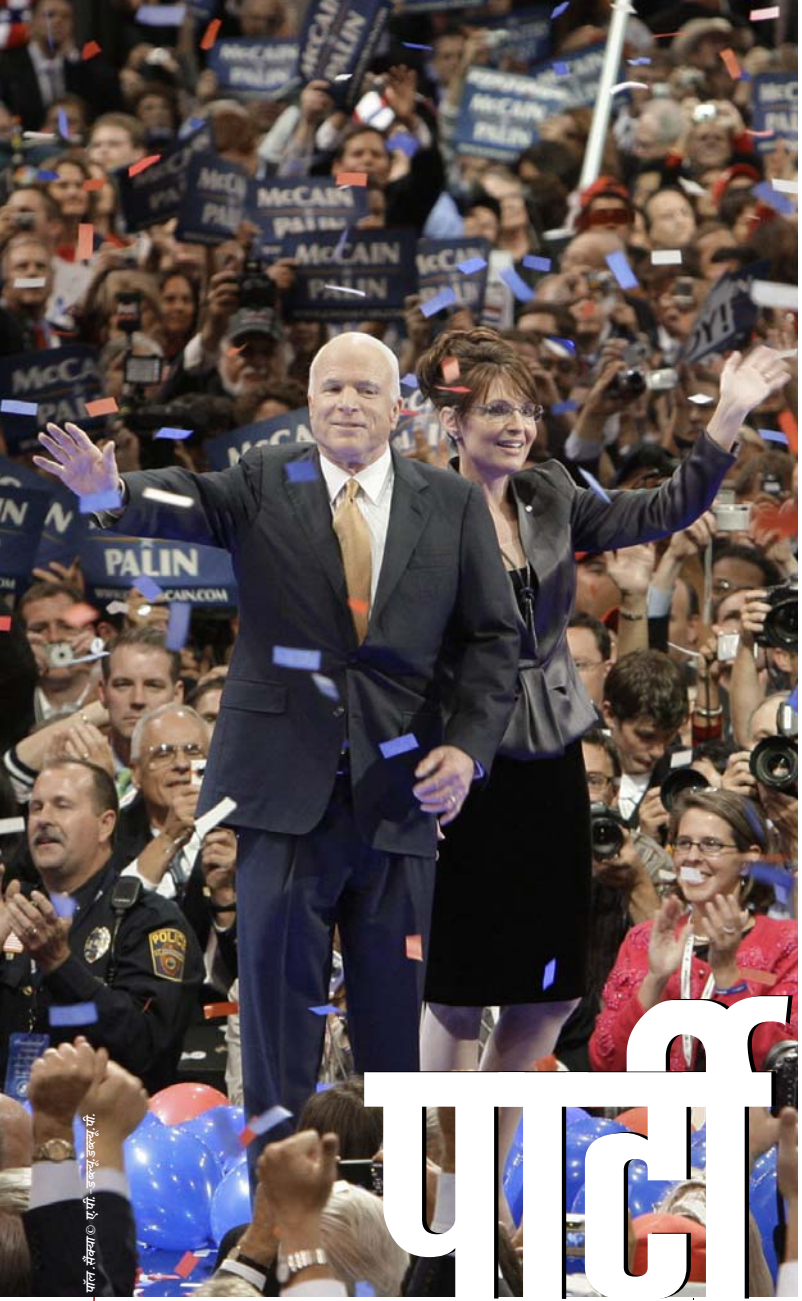

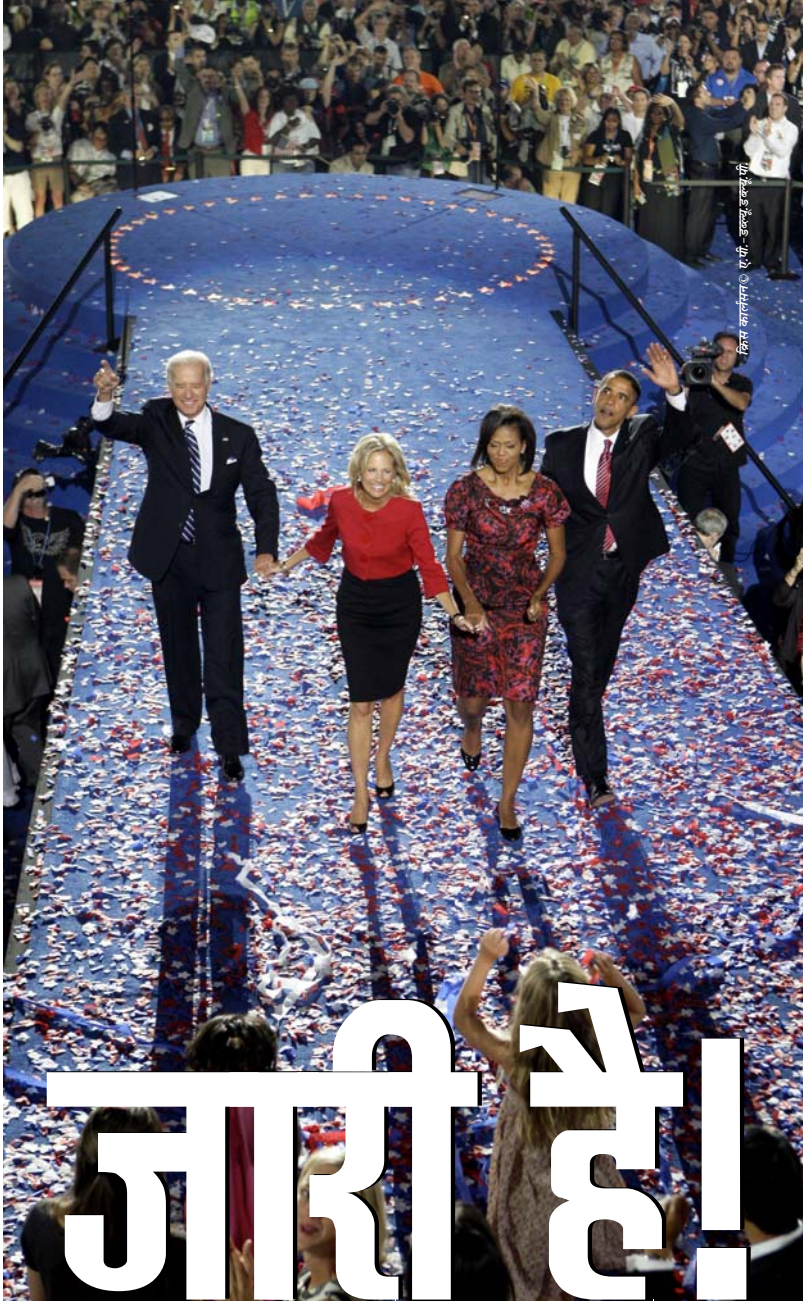

किम कार्लसन © ए.पी./डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

पार्टी जारी है!

चार साल में एक बार अमेरिका के राजनीतिक दल राष्ट्रपति पद के लिए अपने प्रत्याशी को औपचारिक रूप से नामांकित करने के लिए जमा होते हैं। इस बात से उनके उत्साह में रत्ती भर भी कमी नहीं आती कि उनके प्रत्याशियों के नाम महीनों से जगजाहिर हैं और वे एक-दूसरे के विरुद्ध प्रचार में व्यस्त हैं। मौज-मस्ती मनाने का मौका क्यों गंवाया जाए?

ढेरों गुब्बारे और एक बड़े हॉल में बजते बैंड, कानों में ईयरफोन खोंसे चिल्लाकर प्रश्न पूछते टेलिविज़न रिपोर्टर, शोर और तरह-तरह के हैट पहने, झंडियां हिलाते लोगों के बीच किसी तरह उनके प्रश्नों के उत्तर देते प्रत्याशी, अमेरिकियों के लिए राष्ट्रपति पद के लिए अपने दल के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करते अपने राज्य की विशेषता बताते देशभर के लोगों को देखने का मौका, टेलिविज़न के पर्दों पर बढ़ती संख्या दिखाते चार्ट, ''जादुई अंक'' तक पहुंची प्रतिनिधि संख्या और अन्तत: रिपब्लिकन या डेमोक्रेटिक पार्टी द्वारा अपने आधिकारिक प्रत्याशी का नामांकन!

पास के ही किसी होटल के कमरे या कन्वेंशन सेंटर के सुइट में प्रतीक्षा करता प्रत्याशी, उसका परिवार और उसका चुनावी जोड़ीदार और उसका परिवार दर्शकों के उत्साहभरे शोर के बीच मंच पर प्रकट होते हैं। गुब्बारे हवा में छोड़े जाते हैं, जीवनसाथियों को चूमा जाता है और सभी लोग उस परम्परागत फोटो के लिए एकसाथ अपनी बाहें ऊपर उठाकर मुस्कुराते हैं जो हर चार बरस में खींचा जाता है।

हर चार बरस बाद अमेरिका के मुख्य राजनीतिक दल जब अपने अधिवेशनों में राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति पद के लिए अपने दल के प्रत्याशियों को नामांकित करते हैं तो अमेरिकियों को टेलिविज़न पर यही दृश्य देखने को मिलता है। यह कुछ नासमझी सी लगती है क्योंकि आजकल सबसे अधिक प्रतिनिधियों के मत प्राप्त करने वाले प्रत्याशी का नाम लोगों को अधिवेशनों से हफ़्तों पहले से पता होता है, लेकिन राजनीतिक दलों के लिए यह राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति पद के लिए अपने दल के प्रत्याशियों को ही नहीं, अमेरिकी कांग्रेस और राज्यों के चुनावों के लिए भी अपने प्रत्याशियों को प्रदर्शित करने का और खुद को विरोधी पक्ष से कुछ हटकर, कुछ अलग दिखाने का एक अच्छा अवसर होता है।

अधिवेशनों की विशेषता दल के नेताओं के भाषण, अक्सर नामित प्रत्याशी के साथ चुनावी जोड़ीदार के रूप में चुनाव लड़ने वाले उपराष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के नाम की घोषणा और दल के घोषणापत्र में अंतिम सुधार होते हैं।

पहले यह प्रक्रिया कुछ अधिक उत्तेजना से भरी होती

बिल्कुल बाएं: जॉन मैक्केन सेंट पॉल, मिनेसोटा में रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन के मौके पर उपराष्ट्रपति पद की साथी उम्मीदवार सैरा पैलिन के साथ।
बाएं: डेनवर, कोलोरैडो में डेमोक्रेटिक पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में जो बाइडन (बाएं), उनकी पत्नी जिल, मिशेल और बाराक ओबामा।

थी– हर राज्य प्रतिनिधिमंडल का अध्यक्ष खड़ा होता, भोंपुओं का बजना और झंडियों का लहराया जाना रुकता और वह डाले जा रहे प्रतिनिधि मतों की संख्या की घोषणा करता। राज्य की आधिकारिक पाई या प्रिय पक्षी या प्रमुख उद्योग के बारे में जानकारियां सुनना रोचक लगता था। अगर प्राइमरी या कॉकस मतदान करीब होता तो अधिवेशन केंद्र में सटकर बैठे लोगों के समूह दिखते– प्रत्याशी के समर्थक अपना मन न बना पाए या कभी-कभी मन बना चुके डेलिगेट को भी प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने को राजी कर रहे होते थे। कभी-कभी कोई हारता प्रत्याशी किसी प्रिय नीति को दल के घोषणापत्र में शामिल किए जाने या उपराष्ट्रपति का प्रत्याशी नामांकित किए जाने या मंत्रिपद दिए जाने के एवज में मतदान को निर्विरोध होने देने को राजी हो जाता। अक्सर कोई हठ का धनी प्रतिनिधि अपने राज्य के ''प्रिय पुत्र या पुत्री'' के पक्ष में मतदान करने पर अड़ा रहता, भले ही उसके जीतने की सम्भावना शून्य हो। यहां तक कि महीनों पहले नामांकन की दौड़ से बाहर हो चुके प्रत्याशियों के पक्ष में भी मतदान होता।

आज प्रत्याशियों के चयन की प्रक्रिया एक ऐसे कार्यक्रम में बदल चुकी है जिसके पल-पल की खबर देना अधिकांश अमेरिकी टेलिविज़न चैनल जरूरी नहीं मानते, लेकिन कभी-कभी कोई चकित कर देने वाली घटना घट जाती है। वर्ष 2004 में ऐसी ही एक घटना थी इलिनॉय राज्य के युवा सेनेटर बाराक ओबामा का मर्मस्पर्शी भाषण। वह उसी दिन राष्ट्रीय मंच पर प्रकट हुए थे। आज चार बरस बाद वह राष्ट्रपति पद के लिए अपने दल के प्रत्याशी हैं।

अमेरिकी संविधान में राजनीतिक दलों द्वारा अपने प्रत्याशी चुने जाने के बारे में कोई नियम नहीं हैं। इसका कारण यह है कि अठारहवीं शताब्दी में जब संविधान लिखा गया तब तक राजनीतिक दलों का अस्तित्व ही नहीं था और देश की व्यवस्था के संस्थापकों की हार्दिक इच्छा थी कि स्थिति ऐसी ही बनी रहे।

अठारहवीं शताब्दी के अंत तक, 1796 में अमेरिकी कांग्रेस के सदस्य किसी न किसी राजनीतिक दल से जुड़ने लगे थे और अनौपचारिक गुटों में बैठकर अपने दल के राष्ट्रपति पद और उपराष्ट्रपति पद के प्रत्याशियों के नामों पर सहमति तैयार करने लगे थे। अमेरिका के पश्चिम की ओर होते विस्तार के साथ राजनीति में हो रहे सत्ता के विकेन्द्रीकरण के चलते किंग कॉकस कही जाने वाली इस प्रणाली का वर्ष 1824 में वर्चस्व टूटा।

अंततः कॉकस की जगह राष्ट्रीय नामांकन अधिवेशनों ने ली। ऐसा पहला अधिवेशन 1831 में एंटी-मेसन्स नाम के एक छोटे से दल ने किया। उसके प्रतिनिधि प्रत्याशियों के चुनाव और दल का घोषणापत्र लिखने के लिए बाल्टिमोर, मेरीलैंड के एक सैलून में जुटे। अगले बरस डेमोक्रेटिक पार्टी के लोग भी अपने प्रत्याशियों के चुनाव के लिए उसी सैलून में मिले। तब से प्रमुख दल और अधिकांश छोटे दल राज्य प्रतिनिधियों की उपस्थिति वाले नामांकन अधिवेशन आयोजित करते हैं।

19वीं और 20वीं सदियों में राष्ट्रपति पद के प्रत्याशियों के नामांकन के लिए होने वाले अधिवेशनों में दलों के कर्ताधर्ता भाग लेते थे लेकिन फिर भी इन पर दल के राज्य नेताओं का नियंत्रण रहता था। ये नेता अपने प्रभाव का उपयोग अपनी पसन्द के राज्य प्रतिनिधि चुनने और दल के राष्ट्रीय अधिवेशन में ''सही ढंग'' से मतदान होना सुनिश्चित करने के लिए करते थे। लम्बे सार्वजनिक भाषणों और बहसों के बीच दल के नेता और उनके प्रमुख समर्थक अपेक्षाकृत एकांत में बैठकर नीति और मंत्रिमंडल के गठन जैसे महत्वपूर्ण फैसले लेते थे। दल के नेताओं के विरोधियों ने मांग की कि इस प्रचलन में सुधार करके साधारण मतदाताओं को अधिवेशन प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया जाए। इस तरह प्राइमरी इलेक्शन की परम्परा शुरू हुई। 1916 तक अमेरिका के आधे से अधिक राज्यों में राष्ट्रपति के चुनाव के लिए प्राइमरी इलेक्शन होने लगे थे।

सूसन वाल्श © ए.पी.- डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

बिल रॉस © ए.पी.- डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

सबसे ऊपर: रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में वर्जिन आइलैंड्स के प्रतिनिधि हम्बर्टो ओ'नील (बाएं) और लिलियाना बेलार्डो डि ओ'नील।
ऊपर: डेमोक्रेटिक पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन के आखिरी दिन आतिशबाजी प्रदर्शन।

लेकिन यह दौर ज़्यादा चला नहीं। दूसरे विश्वयुद्ध के समाप्त होने के बाद अपनी चौधराहट को खतरे में पड़ा देख दलों के नेताओं ने राज्य विधानसभाओं को यह तर्क देकर प्राइमरीज़ खत्म करने पर राजी कर लिया कि ये चुनाव महंगे पड़ते हैं और इसमें अपेक्षाकृत कम लोग भाग लेते हैं। 1936 तक कुल बारह राज्यों में प्राइमरीज़ होने लगे।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया अपनाए जाने के दबाव बढ़े। पहली बार टेलिविज़न ने लोगों के लिए चुनाव अभियानों को घर बैठे देखना और सुनना सम्भव बनाया। सम्भावित प्रत्याशी इस नए माध्यम का उपयोग एक व्यापक मतदाता वर्ग को प्रभावित करने के लिए कर सकते थे। अगले दशकों में राजनीतिक दलों के प्रत्याशी नामांकन अधिवेशनों में अधिक व्यापक भागीदारी फिर से सम्भव हुई।

आज सभी राज्य प्राइमरी चुनाव या कॉकस का आयोजन करके प्रमुख दलों के प्रत्याशियों के चुनाव के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। राज्य के कानूनों या दल के नियमों का पालन करते हुए प्राइमरी मतदाता किसी प्रत्याशी के लिए या राष्ट्रीय अधिवेशनों में उस प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने के लिए वचनबद्ध प्रत्याशियों के दल (स्लेट) के लिए मतदान करते हैं, या वे किसी काउंटी या राज्य अधिवेशन में भाग लेने के लिए उन प्रतिनिधियों के लिए मतदान करते हैं जिनमें से अधिवेशन के लिए प्रतिनिधि चुने जाएंगे। यह प्रक्रिया हालांकि महीनों चलती है लेकिन पसन्दीदा प्रत्याशी का नाम मतदान के पहले ही दौर में स्पष्ट होने लगता है।

अधिवेशन के लिए किसी राज्य के प्रतिनिधिमंडल का आकार हर दल द्वारा एक फ़ॉर्मूले के आधार पर नियत होता है जिसमें राज्य की जनसंख्या, दल के राष्ट्रीय प्रत्याशियों के लिए अतीत में प्राप्त समर्थन और सार्वजनिक पदों पर आसीन राज्य के वासी दल के कार्यकर्ताओं की संख्या आदि बातों पर ध्यान दिया जाता है। डेमोक्रेटों द्वारा अपनाया जाने वाला सूत्र कुछ ऐसा है कि उनके प्रतिनिधियों की संख्या रिपब्लिकनों के प्रतिनिधियों से दो गुनी होती है।

राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के नामांकन की प्रक्रिया में बदलावों का एक परिणाम है दलों के नामांकन अधिवेशनों का घटता महत्व। आज प्राइमरीज़ के शुरुआती दौर में ही राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी की छवि स्पष्ट होने लगती है। और यह व्यक्ति अधिवेशन की बैठक से काफी पहले ही अपने चुनावी जोड़ीदार के नाम की घोषणा कर सकता है। बहुत से अमेरिकी अब केवल राष्ट्रपति पद के लिए नामांकित प्रत्याशी के अपने नामांकन को स्वीकार करते हुए दिए भाषण को सुनने के लिए ही आखिरी दिन टेलिविज़न देखते हैं। पहले राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी नामांकन अधिवेशनों में शामिल ही नहीं होते थे। वर्ष 1932 में इस परम्परा को तोड़ते हुए फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट डेमोक्रेटिक पार्टी के अधिवेशन में शामिल हुए। वह नामांकन की दौड़ और राष्ट्रपति पद का चुनाव, दोनों में जीते।

यह लेख अमेरिकी विदेश विभाग के प्रकाशन यूएसए इलेक्शंस इन ब्रीफ *से लिया गया है। इसमें लॉरिंडा कीज़ लौंग ने भी योगदान किया है।*